



मई 2016

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

- | | |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 8 आधे अधूरे जीवन की तुलना में मृत्यु कम भयावह विशेष स्तम्भ | 77 झारखण्ड सचिवालय निम्नवर्गीय लिपिक प्रारम्भिक परीक्षा, 2015 (17.1.2016 को आयोजित) |
| 9 समसामयिक सामान्य ज्ञान | 85 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड सम्मिलित प्रारम्भिक (गैर-तकनीकी श्रेणी) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न |
| 14 आर्थिक परिदृश्य | 91 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड सम्मिलित प्रारम्भिक (गैर-तकनीकी श्रेणी) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न |
| 19 राष्ट्रीय परिदृश्य | 98 आर.आर.सी. (गोरखपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014 आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग सम्मिलित लिखित (प्रा.) परीक्षा, 5-12-2015 |
| 23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य | 104 तर्कशक्ति परीक्षा |
| 29 क्रीड़ा जगत् | 107 संख्यात्मक अभियोग्यता |
| 31 आईसीसी ट्वेंटी-20 विश्व कप (2016) : पुरुष व महिला दोनों ही वर्गों में वेस्टइंडीज विजेता | 111 English Language आगामी स्टेट बैंक लिपिकीय संवर्ग (प्रारम्भिक) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न |
| 35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य | 114 तर्कशक्ति |
| 36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं | 119 General English |
| 39 सारभूत तत्व कोष लेख | 121 आंकिक क्षमता |
| 43 वानिकी लेख-उत्तराखण्ड में वन-संरक्षण आन्दोलन तथा उसकी भूमिका | 124 सामान्य जानकारी-प्रवासी भारतीय सार्वजनिक कार्यक्षेत्र में नीति रूपरेखा, सांस्थानिक व्यवस्थापन, प्रोग्राम्स एवं गतिविधियाँ-पर्यावलोकन |
| 47 कैरियर लेख-कर्मचारी चयन आयोग संयुक्त स्नातकस्तरीय परीक्षा, 2016 | 127 क्या आप परिचित हैं ? |
| 50 वैज्ञानिक लेख-गुरुत्वाकर्षण तरंगों की खोज | 128 रोजगार समाचार |
| 51 भारत के पड़ोसी देश हल प्रश्न-पत्र | |
| 58 उत्तर प्रदेश ग्राम पंचायत विकास अधिकारी परीक्षा, 2015 (21-2-2016 को आयोजित) | |
| 63 राजस्थान (सवाई माधोपुर) वनरक्षक सीधी भर्ती परीक्षा, 2016 | |
| 66 उत्तराखण्ड अधीनस्थ शिक्षा (प्रशिक्षित स्नातक) सेवा सहायक अध्यापक/ अध्यापिका परीक्षा, 2014 (29-3-2015 को आयोजित) | |
| 71 छत्तीसगढ़ प्री-बी.एड. परीक्षा, 2015 | |

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

आधे अधूरे जीवन की तुलना में मृत्यु कम भयावह

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

*"Do not fear death so much but
rather the inadequate Life."*

— Bertolt Brecht

वही जीवन सार्थक है, जो पूर्णता से जिया जाता है. पूर्णता से जीने का अर्थ है, जहाँ मस्तिष्क व हृदय दोनों केन्द्रों का सम्पूर्ण उपयोग हो. जहाँ दिल-दिमाग स्वस्थ व सन्तुलित गति करते हो. जहाँ न तो शारीरिक ऊर्जा का अपव्यय हो, न ही बौद्धिक क्षमताओं का तथा न ही भावनात्मक अवस्थाओं का. जिस जीवन में मन-वाणी-कर्म की संगति हो वहीं संगीत झंकृत होता है. जीवन लयबद्ध होता है. ऐसा जीवन एक सन्तुलित, समझदार व प्रफुल्लित व्यक्ति ही जी पाता है. अधिकांश लोग इस जिन्दगी के अमूल्य उपहार को, अमूल्य तन-मन व भावनाओं को बिना उपयोग में लाए ही नष्ट करते रहते हैं. वे हर बात में डरते-डरते जीते हैं, उनके भावों व कर्मों में संगति नहीं होती, वे चाहते कुछ हैं, करते कुछ हैं.

'यह सृष्टि चित्तों का जंगल है' यह हमारा मन अनेक चित्तों में बँटा हुआ है. हर चित्त में मौजूद चित्र, विचार जुदा-जुदा है. मन जब तक बहुचित्ता बना है, हम भ्रमित ही रहेंगे. सदा उलझन में रहेंगे कि क्या करूँ, क्या न करूँ ?

विद्यार्थी भ्रमित है कि कौनसा विषय चुनूँ, कौनसी परीक्षा की तैयारी करूँ, किस तरफ प्रयास करूँ, एक व्यापारी भी इसी तरह भ्रमित है, कि किस चीज को दुकान में बढ़ाऊँ, एक नौकरी-पेशा करने वाला भी भ्रमित है कि किस क्षेत्र में रोजगार करे, किसे छोड़े, किसे पकड़े, एक गृहिणी भी भ्रमित है कि शाम के खाने की व्यंजना क्या रखे, बच्चे को कौनसे स्कूल में डाले, किनसे रिश्तेदारी निभाए, किसको अपनाए, किससे आँखें चुराए—यहाँ हर कोई विविध विषयों को लेकर भ्रमित ही नजर आता है. एक मिश्रित-सी जिन्दगी जीते-जीते हमारी प्राण ऊर्जा निरन्तर चुकती चली जाती है. दिली उत्साह मन्द हुआ जाता है, जिसको करने के लिए पैदा हुए हैं, वही नहीं कर पाते हैं. ये भ्रमणाएँ हमारे भीतर मन में हैं, इसीलिए चारों ओर जीवन में हैं. इन भ्रमणाओं में जीते हुए अनेक युवा अपनी तेजस्विता, कर्मठता व क्षमताओं को क्षीण करते जाते हैं.

इस मन की दुविधाओं को दूर करने के लिए हमें अपने दिल की आवाज को सुनना चाहिए. शान्त मन होकर खुद से, अन्तर्मन से पूछना चाहिए कि सही-सही वह चाहता क्या है ? उसकी वास्तविक अभिलाषा क्या है ? जो आपकी दिली तमन्ना है, उसको अनुभव करते ही आपकी आँखों में चमक, हृदय में प्रपफुल्लता व होठों पर मुस्कान जरूर तैरेगी. खुद से पूछो

